हिमालय की बेटियाँ

मूल विषय-वस्तु

क्रमशः 3

जिन्होंने मैदानों में ही इन नदियों को देखा होगा, उनके खयाल में शायद ही यह बात आ सके कि बूढ़े हिमालय की गोद में बच्चियाँ बनकर ये कैसे खेला करती हैं। माँ- बाप की गोद में नंग-धड़ंग होकर खेलनेवाली इन बालिकाओं का रूप पहाड़ी आदमियों के लिए आकर्षक भले न हो, लेकिन मुझे तो ऐसा लुभावना प्रतीत हुआ वह रूप कि हिमालय को ससुर और समुद्र को उसका दामाद कहने में कुछ भी झिझक नहीं होती है।

कलिदास के विरही यक्ष ने अपने मेघदूत से कहा था – वेत्रवती (बेतवा) नदी को प्रेम का प्रतिदान देते जाना, तुम्हारी वह प्रेयसी तुम्हें पाकर अवश्य ही प्रसन्न होगी। यह बात इन चंचल नदियों को देखकर मुझे अचानक याद आ गई और सोचा कि शायद उस महाकवि को भी नदियों का सचेतन रूपक पसंद था। दरअसल जो भी कोई नदियों को पहाड़ी घाटियों और समतल आँगनों के मैदानों में जुदा-जुदा शक्लों में देखेगा, वह इसी नतीजे पर पहुँचेगा।

काका कालेलकर ने नदियोंको लोकमाता कहा है। किंतु माता बनने से पहले यदि हम इन्हें बेटियों के रूप में देख लें तो क्या हर्ज है ? और थोड़ा आगे चलिए...इन्हीं में अगर हम प्रेयसी की भावना करें तो कैसे रहेगा? ममता का एक और भी धागा है, जिसे हम इनके साथ जोड़ सकते हैं। बहन का स्थान कितने कवियों ने इन नदियों को दिया है। एक दिन मेरी भी ऐसी भावना हुई थी। थो-लिङ् (तिब्बत) की बात है। मन उचट गया था, तबीयत ढ़ीली थी। सतलज के किनारे जाकर बैठ गया। दोपहर का समय था। पैर लटका दिये पानी में। थोड़ी ही देर में उस प्रगतिशील जल ने असर डाला। तन और मन ताज़ा हो गया तो लगा मैं गुनगुनाने-

जय हो सतलज बहन तुम्हारी
लीला अचरज बहन तुम्हारी
हुआ मुदित मन हटा खुमारी
जाऊँ मैं तुम पर बलिहारी
तुम बेटी यह बाप हिमालय
चिंतित पर, चुपचाप हिमालय
प्रकृति नटी के चित्रित पट पर
अनुपम अद्भुत छाप हिमालय
जय हो सतलज बहन तुम्हारी!

नागार्जुन

कठिन शब्द

विरही – पत्नी या प्रेयसी से अलग होकर दुःखी रहने वाला

प्रतिपादन – लौटाना

सचेतन – सजीव

जुदा-जुदा – अलग-अलग

उचटना – उदास होना

मुदित – प्रसन्न

खुमारी – आलस्य

नटी – नर्तकी

पट – कपड़ा/ वस्त्र

प्रश्न अभ्यास

लेख से-

प्रश्न 1.नदियों को माँ मानने की परंपरा हमारे यहाँ काफ़ी पुरानी है। लेकिन लेखक नागार्जुन उन्हें और किन रूपों में देखते हैं ?

उत्तर – भारतीय संस्कृति में नदियों को माँ मानने की परंपरा रही है, लेकिन लेखक इन नदियों को विभिन्न रूपों में देखता है। वह उन्हें बेटी, प्रेयसी, एवं बहन के रूप में देखता है। इनके साथ ममता का धागा है, जिन्हें हम जोड़ सकते हैं।

प्रश्न 2. सिंधु और ब्रह्मपुत्र की क्या विशेषताएँ बताई गई हैं ?

उत्तर – सिंधु और ब्रह्मपुत्र से ही अनेक नदियाँ रावी, सतलज, व्यास, चिनाव, झेलम, कुम्भा, कपिशा, गंगा, यमुना, सरयू, गंडक, कोसी आदि नदियाँ निकलती हैं। हिमालय के हिमनदों से पिघलकर एक-एक बूँद से यह नदियाँ बनकर समुद्र की ओर बहती हैं। लेखक के अनुसार हिमालय बहुत सौभाग्यशाली है, जिन्हें इन बेटियों का हाथ थामने का सौभाग्य मिला है।

प्रश्न 3. काका कालेलकर ने नदियों को लोकमाता क्यों कहा है ?

उत्तर – काका कालेलकर ने इन नदियों को लोकमाता कहा है क्योंकि नदियों ने शताब्दियों से मनुष्य जीवन को जीवनदान दिया है। नदियों के किनारे विभिन्न शहर बसे और आवागमन के साधन विकसित हुए। नदियों पर ही बाँध बनाकर नहरें निकाली जाती हैं, जिससे खेतों की सिंचाई व बिजली उत्पादन होता है। साथ ही इन्हीं नदियों में विभिन्न जलीय जीवों का संसार विकसित होता है।

प्रश्न 4. हिमालय की यात्रा में लेखक ने किन-किन की प्रशंसा की है।

उत्तर – हिमालय की यात्रा में लेखक ने पर्वतराज हिमालय की ,इसके हिमनदों, विभिन्न नदियों सिंधु और ब्रह्मपुत्र, हरी-भरी घाटियों, बादलों, समुद्र आदि की प्रशंसा की है।

लेख से आगे

नदी पर कविता-

नदी (कामधेनु)

नदी ने कहा था : मुझे बाँधो
मनुष्य ने सुना और
तैरकर धारा को पार किया
नदी ने कहा था : मुझे बाँधो
मनुष्य ने सुना और
सपरिवार धारा को
नाव से पार किया।
नदी ने कहा था : मुझे बाँधो
मनुष्य ने सुना और
आखिर उसे बाँध लिया
बाँधकर नदी को
मनुष्य दुह रहा है।
अब वह कामधेनु है।

हिमालय पर कविता-

हिमालय

खड़ा हिमालय बता रहा है
डरो न आँधी-पानी में,
खड़े रहो तुम अविचल होकर
सब संकट तूफानी में।
डिगो न अपने प्रण से तुम
सब कुछ पा सकते हो प्यारे;
तुम भी ऊँचे उठ स्कते हो
छू सकते हो नभ के तारे।
अचल रहा जो अपने पथ पर
लाख मुसीबत आने में,
मिली सफ़लता उसको जग में
जीने में मर जाने में।

प्रश्न 3 यह लेख 1947 में लिखा गया था। तब से हिमालय से निकलने वाली नदियों में क्या-क्या बदलाव आए हैं।

उत्तर- वर्ष 1947 से अब तक हिमालय से निकलने वाली नदियों में अनेक बदलाव आए हैं। स्वतंत्रता प्राप्ति के कुछ वर्षों बाद तक इन नदियों का जल साफ तथा स्वास्थ्यवर्द्धक रहा, परंतु ज्यों-ज्यों औद्योगीकरण का विकास और जनसंख्या में वृद्धि होती गई, त्यों-त्यों इन नदियों का जल प्रदूषित होता गया और उत्तरोत्तर यह पीने योग्य भी न रहा।

जीवनदायिनी कहलाने वाली ये नदियाँ अब रोग-वाहिनी बनकर रह गई हैं।

प्रश्न 4 अपने संस्कृत शिक्षक से पूछिए कि कालिदास ने हिमालय को देवात्मा क्यों कहा है ?

उत्तर- प्राचीनकाल से ही हिमालय पर देवताओं और ऋषि-मुनियों का निवास-स्थान माना जाता रहा है। पवित्र आत्माओं का वास होने के कारण ही कालिदास ने हिमालय को देवात्मा कहा है।

अनुमान और कल्पना-

प्रश्न 1 लेखक ने हिमालय से निकलनेवाली नदियों को ममता भरी आँखों से देखते हुए उन्हें हिमालय की बेटियाँ कहा है। आप उन्हें क्या कहना चाहेंगे ? नदियों को सुरक्षा के लिए कौन-कौन से कार्य हो रहे हैं ? जानकारी प्राप्त करें और अपना सुझाव दें।

उत्तर- लेखक ने हिमालय से निकलने वाली नदियों को हिमालय की बेटियाँ कहा है। मैं उन्हें लोकमाता कहना चाहूँगे। नदियों की सुरक्षा के लिए कई कार्य किए जा रहे हैं; जैसे-

(क) नदियों को प्रदूषण मुक्त बनाने के लिए सफ़ाई अभियान चलाया जा रहा है।

(ख) नदियों के किनारे बस्तियाँ बसाने पर रोक लगाई जा रही है।

(ग) नदियों के किनारे अपशिष्ट पदार्थ फ़ेकने पर रोक लगाई जा रही है।

(घ) स्वच्छता एवं पवित्रता बनाए रखने के लिए लोगों में जागरुकता फैलाई जा रही है।

भाषा की बात-

प्रश्न 1 अपनी बात को कहते हुए लेखक ने अनेक समानताएँ प्रस्तुत की हैं। ऐसी तुलना से अर्थ अधिक स्पष्ट एवं सुंदर बन जाता है। उदाहरण-

(क) संभ्रांत महिला की भाँति वे प्रतीत होती थीं।

(ख) माँ और दादी, मौसी और मामी की गोद की तरह उनकी धारा में भी डुबकियाँ लगाया करता।

- अन्य पाठों से ऐसे पाँच तुलनात्मक प्रयोग निकालकर कक्षा में और उन सुंदर प्रयोगों को अपने कापी में भी लिखिए।

उत्तर- (i)लाल किरण सी चोंच खोल चुगते तारक अनाज के दाने ।

(ii) दादी माँ शापभ्रष्ट देवी-सी लगी।

(iii) उन्होंने संदूक खोलकर चमकती- सी एक चीज निकाली।

(iv) बच्चे ऐसे सुंदर थे जैसे सोने के सजीव खिलौने।

(v) वे पक्षी शावक जाली के गोल फ्रेम में किसी ज़ड़े चित्र जैसे लग रहे थे।

प्रश्न 2 निर्जीव वस्तुओं को मानव-संबंधी नाम देने से निर्जीव वस्तुएँ भी मानो जीवित हो उठती हैं। लेखक ने इस पाठ में कई स्थानों पर ऐसे प्रयोग किए हैं, जैसे-

(क) परंतु इस बार जब मैं हिमालय के कंधे पर चढ़ा तो वे कुछ और रूप में सामने थीं।

(ख) काका कालेलकर ने नदियों को लोकमाता कहा है।

- पाठ में इसी तरह के और उदाहरण ढूँढ़िये।

उत्तर – (i) बड़ी गंभीर, शांत, अपने आप में खोई हुई लगती थी।

(ii) तब भी इतना कौतूहल और विस्मय नहीं होता, जितना कि इन बेटियों की बाल लीला देखकर।

(iii) कहाँ भागी जा रहीं है।

(iv) शायद इन्हें बीती बातें यादकरने का मौका मिल जाता होगा।

(v) हिमालय की छोटी –बड़ी सभी बेटियाँ आँखों के सामने नाचने लगती हैं।

प्रश्न 3. पिछली कक्षा में आप विशेषण और उसके भेदों का परिचय प्राप्त कर चुके हैं।

नीचे दिये गये विशेषण और विशेष्य(संज्ञा) का मिलान कीजिए-

	विशेषण	विशेष्य
उत्तर-	संभ्रांत	वर्षा
	चंचल	जंगल
	समतल	महिला
	घना	नदियाँ
	मूसलाधार	आँगन

प्रश्न 4 द्वंद्व समास के दोनों पद प्रधान होते हैं। इस समास में 'और' पद का लोप हो जाता है; जैसे- राजा- रानी द्वन्द्व समास है, जिसका अर्थ है राजा और रानी। पाठ में कई स्थानों पर द्वंद्व समासों का प्रयोग किया गया है। इन्हें खोजकर वर्णमाला क्रम (शब्दकोश-शैली) में लिखिए।

उत्तर –छोटी-बड़ी, दुबली-पतली, भाव-भंगिमा, नंग-धड़ंग, माँ-बाप

प्रश्न 5 नदी को उल्टा लिखने पर दीन होता है जिसका अर्थ होता है- गरीब। आप भी ऐसे पाँच शब्द लिखिए, जिसे उल्टा लिखने पर सार्थक शब्द बन जाए। प्रत्येक शब्द के आगे संज्ञा का नाम भी लिखिए, जैसे- नदी, दीन(भाववाचक संज्ञा)

उत्तर-

(i) राधा	धारा	जातिवाचक संज्ञा
(ii)नमी	मीन	जातिवाचक संज्ञा
(iii)याद	दया	भाववाचक संज्ञा
(iv)मार	रमा	व्यक्तिवाचक संज्ञा
(v)हीरा	राही	जातिवाचक संज्ञा

प्रश्न 6 समय के साथ भाषा बदलती है, शब्द बदलते हैं और उनके रूप बदलते हैं; जैसे- बेतवा नदी के नाम का दूसरा रूप 'वेत्रवती' है।

नीचे दिये गए शब्दों में से ढूढकर इन नामों से अन्य रूप लिखिए-

उत्तर – सतलज - शतद्रुम

झेलम - वितस्ता

अजमेर - अजयमेरु

संकलित'- मूल्यांकन

रोपड़ - रूपपुर

चिनाब - विपाशा

बनारस – वाराणसी

प्रश्न 7 'उनके खयाल में शायद ही यह बात आ सके कि बूढ़े हिमालय की गोद में बच्चियाँ बनकर ये कैसे खेला करती हैं।'

- उपर्युक्त पंक्ति में 'ही' के प्रयोग की ओर ध्यान दीजिए। 'ही' वाला वाक्य नकारात्मक अर्थ दे रहा है। इसीलिए 'ही' वाले वाक्य में कही गई बात को हम ऐसे भी कह सकते हैं-उनके खयाल में शायद यह बात न आ सके।
- इसी प्रकार नकारात्मक प्रश्नवाचक वाक्य कई बार 'नहीं' के अर्थ में इस्तेमाल नहीं होते हैं, जैसे-महात्मा गांधी को कौन नहीं जानता ? दोनों प्रकार के वाक्यों के समान तीन-तीन उदाहरण सोचिए और इस दृष्टि से उनका विश्लेषण कीजिए।

उत्तर- 'ही' वाले वाक्य नकारात्मक अर्थ में 'नहीं' का अर्थ न देने वाले

(i)शायद ही वह तुम्हें फोन करे।

(ii)तुम शायद ही मेरी बातों पर विश्वास करो।

(iii)वह शायद ही मेरी मदद करे।

(i)आज मोबाइल फोन कौन नही रखता?

(ii)मुफ्त का माल लेने भला कौन नहीं आएगा?

(iii)कश्मीर में आई भीषण बाढ़ की खबर सुनकर कौन दुःखी नहीं होगा ?

धन्यवाद!